5 OCT 2011

राष्ट्रीय हिन्दी मेल, भोपाल

बेटी बची तो मध्यप्रदेश भी बचा रहेगा

विशेष संपादकीय

विजय कुमार दास

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान क्या खाकर पैदा हुए हैं कि उन्हें हर पल, प्रति दिन केवल बेटियों की चिंता रहती है और उनके राजनीतिक जीवन की यह शिखर यात्रा भी उनके इसी पुण्य प्रताप का फल ही प्रतीत होता है। वरना आजादी के 67 वर्षों के बाद मध्यप्रदेश ने ना जाने कितने मुख्यमंत्री दिये होंगे और कितनी महिलाओं को सफल राजनीतिक भी बनाया होगा और तो और महिला नेत्री साध्वी उमा भारती तो मुख्यमंत्री भी बनी और स्व. श्रीमती जमुना देवी नेता प्रतिपक्ष विधानसभा, भी लंबे समय तक रहीं, परंतु यह चिंता किसी ने नहीं जतायी। हालांकि, शिवराज के बेटी बचाओ अभियान को राजनीतिक एजेंडा और 2013 के विधानसभा चुनाव से भी जोड़ा जा सकता है परंतु ऐसा नहीं है क्योंकि वे जो भी आज तक कर पाये या करके दिखा रहे हैं वे उन्होंने मिशन और मध्यप्रदेश के विकास के एजेंडे के साथ ही किया है इसमें संदेह नहीं है । इसमें किसी को दिक्कत नहीं होनी चाहिए कि निश्चल मन से जनता की सेवा में दिन रात मेहनत करने वाले प्रत्येक इंसान को तसल्ली तो चाहिए ही। बेटी बचाओ अभियान अभी भ्रूण अवस्था में है और इसकी सफलता पर कई सवाल भी हैं। परंतु जब तक कोई आगे आकर इस चुनौती को स्वीकार नहीं करेगा तो वह सफलता की परिकल्पना भी कैसे कर सकता है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भले ही मामा बनकर या भोले भाले किसान के बेटे के रूप में अपनी छबि को निखारने की कोशिशें की है, लेकिन कोशिश की क्या यह कम है और यह बात प्रदेश में प्रत्येक राजनीतिज्ञ को राजनीति से ऊपर समझना भी होगा कि हम बेटियों के मामले में आखिर पिछड़ क्यों रहे हैं। पूरे भारत में 1000 पुरुषों की तुलना में 908 महिलाओं का अनुपात एक चिंता जनक विषय है । मध्यप्रदेश में कम लिंगानुपात वाले लगभग 10 जिलों में गिना जाता है वहां तो कुछ दशकों के बाद पुरुषों को कुंवारा ही रहना पड़ेगा। पूरा देश जहां जनसंख्या कम करने की बात पर वर्षों से संघर्षरत है वहीं मध्यप्रदेश में बेटी बचाओ अभियान का संकल्प ले लेना कठिन ही नहीं बल्कि दूभर कार्य है और इसके लिए मुख्यमंत्री प्रशंसा के पात्र हैं और आने वाले कई दशकों तक प्रशंसा के पात्र बने भी रहेंगे। पूरे भारत में शायद मध्यप्रदेश पहला राज्य होगा जहां पर बेटी बचाओ का संकल्प सरकार ने लिया है। इस संकल्प ने मध्यप्रदेश में यदि आकार ले लिया तो मध्यप्रदेश की काया ही पलट जाएगी। क्योंकि बेटी बचाओ अभियान के पीछे जो दूर दृष्टि छिपी हुई है उसका अंदाज तो शायद मुख्यमंत्री को स्वयं भी नहीं होगा। मध्यप्रदेश में ऐसे भी परिवार होंगे जहां बेटी को अभिशाप माना जाता होगा और ऐसे भी लाखों परिवार हैं जहां बेटी के जन्म लेते ही परिवार खुशियों से ओत-प्रोत हो जाता है। ऐसी स्थिति में समानता लाकर बेटी बचाओ अभियान की परिकल्पना अदभुद है। लोग कहेंगे कि शिवराज ने बेटी बचाओ अभियान से (शेष पृष्ठ 9 पर)

बेटी बची तो ...

2013 में सरकार बचाओ अभियान की शुरूआत कर दी है, लेकिन उन्हें इस प्रपंच से दूर रहना होगा। प्रत्येक जनहितकारी अभियान के परिणाम निकलते हैं कुछ के ज्यादा फलदायक होते हैं और कुछ की परिकल्पना के साकार होने के पहले ही भ्रूण हत्या हो जाती है। इसलिए बेटी बचाओ अभियान की कोई भ्रूण हत्या ना कर दे इसकी सावधानी भी बरतनी पड़ेगी। रहा सवाल 2013 के विधानसभा चुनाव का तो कन्यादान से शुरू होकर बेटी बचाओ अभियान मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान को एक पारिवारिक मुख्यमंत्री के रूप में स्थापित कर दे तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। यह बात भी सच है कि यदि बेटी बच गई तो मध्यप्रदेश भी बचा रहेगा, इसलिए इस अभियान का समर्थन जो भी करेगा वह स्वागत योग्य ही होगा।